सकारात्मक एवं सहायक शिक्षण वातावरण का निर्माण

(Creating a Positive and Supportive Learning Environment)

एक सकारात्मक शिक्षण वातावरण से तात्पर्य उस परिवेश से है जहाँ छात्र स्वयं को सुरक्षित, सम्मानित और प्रेरित महसूस करते हैं। यह केवल भौतिक सुख-सुविधाओं (जैसे बेंच, पंखे) तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें मनोवैज्ञानिक और सामाजिक सुरक्षा सर्वोपरि है। अधिगम मनोविज्ञान (Learning Psychology) के अनुसार, जब छात्र तनावमुक्त होता है, तभी उसका संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development) अपनी उच्चतम क्षमता तक पहुँच पाता है।

कक्षा में सकारात्मक और सहायक सीखने का माहौल (Positive & Supportive Learning Environment) बनाने के लिए सुरक्षित, समावेशी और उत्साहजनक माहौल आवश्यक है। इसके लिए स्पष्ट नियम, परस्पर सम्मान, भावनात्मक जुड़ाव, सक्रिय भागीदारी और सकारात्मक सुदृढीकरण (reinforcement) का उपयोग करें। शिक्षक को व्यक्तिगत ध्यान देना चाहिए, दिनचर्या को व्यवस्थित करना चाहिए और गलतियों को सीखने के अवसर के रूप में प्रोत्साहित करना चाहिए। एक सकारात्मक शिक्षण वातावरण (Positive Learning Environment) केवल चार दीवारों और फर्नीचर का समूह नहीं है, बल्कि यह **"शैक्षिक पारिस्थितिकी" (Educational Ecology)** का हिस्सा है। कार्ल रोजर्स के अनुसार, "अधिगम तब सबसे प्रभावी होता है जब शिक्षक छात्र के प्रति 'बिना शर्त सकारात्मक सम्मान' (Unconditional Positive Regard) रखता है।"

सकारात्मक वातावरण के प्रमुख आयाम (Dimensions)

(क) मनोवैज्ञानिक आयाम (Psychological Dimension)

- **आत्म-प्रभावकारिता (Self-Efficacy):** वातावरण ऐसा हो जो छात्र को यह विश्वास दिलाए कि वह सीख सकता है।
- **अधिकार और स्वायत्तता:** छात्रों को विकल्प चुनने की आजादी देना (जैसे: अपनी पसंद का प्रोजेक्ट चुनना)।

(ख) सामाजिक आयाम (Social Dimension)

- **पीयर सपोर्ट (Peer Support):** छात्रों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के बजाय सहयोगात्मक अधिगम (Collaborative Learning) को बढ़ावा देना।
- **बदमाशी (Bullying) के प्रति शून्य सहिष्णुता:** एक सुरक्षित सामाजिक ताने-बाने का निर्माण।

(ग) संवेगात्मक आयाम (Emotional Dimension)

- शिक्षक और छात्र के बीच **'ट्रस्ट बॉन्ड' (Trust Bond)**। छात्र की भावनाओं को स्वीकार करना (Emotional Validation)।

मास्लो और सेलिगमैन के सिद्धांतों का अनुप्रयोग (Theoretical Integration)

1. **मास्लो का पदानुक्रम (Maslow's Hierarchy):** एक शिक्षक को पता होना चाहिए कि यदि छात्र भूखा है या असुरक्षित महसूस कर रहा है (Lower needs), तो वह गणित या विज्ञान (Higher needs) नहीं सीख सकता। सहायक वातावरण इन बुनियादी जरूरतों को पूरा करता है।

2. **PERMA मॉडल (Martin Seligman):**
    - **P (Positive Emotion):** कक्षा में खुशी और उत्साह।
    - **E (Engagement):** गतिविधियों में तल्लीनता।
    - **R (Relationships):** शिक्षक-छात्र और छात्र-छात्र मजबूत संबंध।
    - **M (Meaning):** छात्र को लगे कि वह जो पढ़ रहा है, उसका जीवन में महत्व है।
    - **A (Accomplishment):** सफलता का अनुभव।

सकारात्मक एवं सहायक शिक्षण वातावरण के निर्माण को प्रभावित करने वाले कारक

सकारात्मक एवं सहायक शिक्षण वातावरण वह वातावरण है जिसमें विद्यार्थी सुरक्षित, सम्मानित, प्रेरित और प्रसन्न महसूस करते हैं। ऐसा वातावरण सीखने की रुचि, आत्मविश्वास और शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाता है। इसके निर्माण में अनेक शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारक भूमिका निभाते हैं।

- **शिक्षक का व्यक्तित्व और व्यवहार-** शिक्षक का स्नेहपूर्ण, सहानुभूतिपूर्ण, निष्पक्ष और प्रेरणादायक व्यवहार कक्षा में सकारात्मक वातावरण बनाता है। कठोरता और भय सीखने में बाधक होते हैं।
- **शिक्षक-विद्यार्थी संबंध-** विश्वास, सम्मान और खुला संवाद शिक्षक-विद्यार्थी संबंधों को मजबूत बनाता है, जिससे विद्यार्थी स्वयं को सुरक्षित और सहयोग प्राप्त महसूस करते हैं।
- **शिक्षण विधियाँ-** गतिविधि-आधारित, सहभागितापूर्ण और रुचिकर शिक्षण विधियाँ कक्षा को जीवंत बनाती हैं तथा सीखने को आनंददायक बनाती हैं।
- **कक्षा अनुशासन-** लोकतांत्रिक और आत्म-अनुशासन पर आधारित व्यवस्था सकारात्मक वातावरण को बढ़ावा देती है, जबकि दंडात्मक अनुशासन भय उत्पन्न करता है।
- **भौतिक वातावरण:** कक्षा का स्वच्छ, प्रकाशयुक्त, हवादार और सुव्यवस्थित होना विद्यार्थियों की एकाग्रता और मानसिक प्रसन्नता को प्रभावित करता है।
- **समानता और सम्मान:** जाति, लिंग, भाषा, क्षमता या पृष्ठभूमि के आधार पर भेदभाव रहित वातावरण विद्यार्थियों में अपनापन और आत्मसम्मान विकसित करता है।
- **सुरक्षित और समावेशी माहौल:** छात्र भावनात्मक रूप से सुरक्षित महसूस करें, जहाँ वे अपनी बात, रुचियाँ और असफलताएँ साझा कर सकें।
- **प्रेरणा और प्रोत्साहन-** प्रशंसा, सकारात्मक प्रतिपुष्टि (feedback) और पुरस्कार विद्यार्थियों के मनोबल को बढ़ाते हैं और सीखने की इच्छा को सशक्त करते हैं।
- **भावनात्मक सुरक्षा-** विद्यार्थियों की भावनाओं को समझना, उनकी समस्याओं को सुनना और मानसिक तनाव को कम करना सहायक वातावरण के लिए आवश्यक है।
- **सहपाठी संबंध**- सहयोग, मित्रता और समूह भावना कक्षा में सामाजिक सहयोग और सकारात्मकता को बढ़ाती है।
- **विद्यालय प्रशासन और नीतियाँ-** लोकतांत्रिक प्रशासन, छात्र-केन्द्रित नीतियाँ और सहयोगात्मक संस्कृति सकारात्मक शिक्षण वातावरण को सुदृढ़ बनाती हैं।

- **भौतिक वातावरण:** कक्षा को व्यवस्थित, साफ-सुथरा और आकर्षक रखें, जिसमें पर्याप्त रोशनी हो।
- **अभिभावक एवं समुदाय का सहयोग-** अभिभावकों की सहभागिता और समुदाय का सहयोग शिक्षण वातावरण को अधिक समर्थ बनाता है।
- **तकनीक और संसाधनों की उपलब्धता-** आधुनिक शिक्षण साधन, डिजिटल संसाधन और पुस्तकालय सीखने को प्रभावी और रुचिकर बनाते हैं।
- **सकारात्मक सुदृढीकरण (Positive Reinforcement):** अच्छे व्यवहार और छोटी-बड़ी उपलब्धियों की प्रशंसा करें। सकारात्मक बातचीत नकारात्मक से 4:1 के अनुपात में अधिक होनी चाहिए।
- **भावनात्मक समर्थन:** छात्रों की भावनाओं को समझें और उन्हें अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें।

सकारात्मक एवं सहायक शिक्षण वातावरण अनेक कारकों का संयुक्त परिणाम है। शिक्षक, विद्यालय, सहपाठी और समाज—सभी की सहभागिता से ही ऐसा वातावरण निर्मित हो सकता है। ऐसा वातावरण विद्यार्थियों के **सर्वांगीण विकास, प्रसन्नता और शैक्षिक सफलता** का आधार बनता है।

प्रभावी शिक्षण वातावरण का निर्माण

शिक्षा मानव विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू है और किसी भी सफल समाज की आधारशिला है। पारंपरिक शैक्षिक पद्धतियां और सीखने का माहौल बदल रहा है – छात्रों को ऐसे स्थानों की आवश्यकता है जो रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और सहयोग को बढ़ावा दें।

आदर्श कक्षाओं का निर्माण

कैरोल एन टॉमलिंसन ने अपनी पुस्तक '*द डिफरेंशिएटेड क्लासरूम*' (2014) में यह प्रस्ताव रखा है कि: 'ऐसे कक्षाओं में शिक्षक इस आधार को स्वीकार करते हैं और उस पर कार्य करते हैं कि उन्हें सीखने के विभिन्न दृष्टिकोणों के माध्यम से छात्रों को निर्देश देने के लिए तैयार रहना चाहिए, जिसमें रुचियों की एक विस्तृत श्रृंखला को ध्यान में रखना, निर्देश की विभिन्न गतियों के साथ-साथ जटिलता के विभिन्न स्तरों और भिन्न समर्थन प्रणालियों का उपयोग करना शामिल है।'

सकारात्मक शिक्षण वातावरण

छात्रों के शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास के लिए सकारात्मक शिक्षण वातावरण बनाना अत्यंत आवश्यक है। एक सहायक और स्वागतपूर्ण कक्षा का माहौल अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसे एक सौहार्दपूर्ण और आकर्षक वातावरण बनाकर, छात्रों का द्वार पर अभिवादन करके और सकारात्मक भाषा और उच्चारण का प्रयोग करके प्राप्त किया जा सकता है। शिक्षक छात्रों के जीवन और विद्यालय के बाहर के अनुभवों में रुचि दिखाकर भी उनसे संबंध बना सकते हैं।

मजबूत शिक्षक-छात्र संबंध

शिक्षक-छात्र के बीच मजबूत संबंध बनाने के लिए विश्वास, सम्मान, सकारात्मक संवाद और मार्गदर्शन का संयोजन आवश्यक है। शिक्षकों को अपने छात्रों के साथ स्पष्ट और प्रभावी ढंग से संवाद करने का प्रयास करना चाहिए, उन्हें प्रोत्साहित और प्रेरित करने वाली सकारात्मक भाषा का प्रयोग करना चाहिए। शिक्षक की प्रतिक्रिया

भी छात्र के विकास का एक अनिवार्य हिस्सा है। शिक्षकों को ऐसी प्रतिक्रिया देनी चाहिए जो विशिष्ट, कार्रवाई योग्य और छात्रों के कौशल और ज्ञान को बेहतर बनाने में सहायक हो। साथ ही, उन्हें छात्रों को किसी भी चुनौती या बाधा को दूर करने में मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करनी चाहिए। पारदर्शी संवाद और रचनात्मक प्रतिक्रिया विश्वास और सम्मान का निर्माण करने में सहायक होती है और आजीवन सीखने की नींव बनती है।

छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण

विद्यार्थी-केंद्रित अधिगम पद्धति का उद्देश्य विद्यार्थियों को अपनी अधिगम प्रक्रिया का स्वामित्व लेने और उसमें सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए सशक्त बनाना है। प्रज्ञान के कक्षा-कक्षों में ऐसे अधिगम केंद्र बनाए गए हैं जहाँ विद्यार्थियों को मौखिक, लिखित, कलात्मक या प्रौद्योगिकी के उपयोग जैसे विभिन्न माध्यमों से स्वयं को अभिव्यक्त करने का विकल्प दिया जाता है।

स्कूलों के लिए एक योजना

एक प्रभावी शिक्षण वातावरण बनाने के लिए निरंतर व्यावसायिक विकास, प्रभावी कक्षा प्रबंधन, नवीन शिक्षण विधियों और सतत सुधार के प्रति प्रतिबद्धता आवश्यक है। एक प्रभावी अधिगम वातावरण संयोग से नहीं बनता, इसके लिए निरंतर सुधार की प्रतिबद्धता आवश्यक है। इसमें छात्रों की प्रगति का नियमित मूल्यांकन करना और उसके अनुसार शिक्षण में समायोजन करना, छात्रों और सहकर्मियों से प्रतिक्रिया प्राप्त करना और सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने के लिए शिक्षण पद्धतियों पर विचार करना शामिल है।

सामुदायिक सहभागिता और साझेदारी

विद्यालयों को स्थानीय समुदाय के साथ सक्रिय रूप से जुड़ना चाहिए और अभिभावकों, स्थानीय व्यवसायों और अन्य शैक्षणिक संस्थानों जैसे विभिन्न हितधारकों के साथ साझेदारी स्थापित करनी चाहिए। सामुदायिक भागीदारी से जिम्मेदारी, सहयोग और साझा दृष्टिकोण की भावना को बढ़ावा मिलता है।

- **अभिभावकों की भागीदारी :** विद्यालयों को नियमित अभिभावक-शिक्षक बैठकों, स्वयंसेवा के अवसरों और स्कूली कार्यक्रमों के माध्यम से अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करना चाहिए। विद्यार्थियों की सफलता के लिए अभिभावकों का सहयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है, और जो विद्यालय परिवारों के साथ मजबूत संबंध बनाते हैं, वे अधिक सकारात्मक और सहायक शिक्षण वातावरण का निर्माण करते हैं।
- **स्थानीय संगठनों के साथ साझेदारी :** विद्यालय छात्रों के लिए शैक्षिक अवसरों को बढ़ाने के लिए स्थानीय व्यवसायों, गैर-लाभकारी संस्थाओं और सांस्कृतिक संस्थानों के साथ साझेदारी कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, स्थानीय संग्रहालय स्कूलों के साथ मिलकर शैक्षिक क्षेत्र भ्रमण आयोजित कर सकते हैं, या स्थानीय व्यवसाय छात्रों को इंटर्नशिप या मेंटरशिप के अवसर प्रदान कर सकते हैं।

विद्यालय परिसर और शिक्षण वातावरण में सुधार एक बहुआयामी प्रयास है जिसके लिए शिक्षकों, प्रशासकों, छात्रों और व्यापक समुदाय के बीच सहयोग आवश्यक है। आधुनिक बुनियादी ढांचे में निवेश करके, प्रौद्योगिकी

को अपनाकर, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देकर, शिक्षकों के विकास को प्रोत्साहित करके और सकारात्मक विद्यालय संस्कृति को विकसित करके, विद्यालय एक ऐसा वातावरण प्रदान कर सकते हैं जहाँ छात्र शैक्षणिक, सामाजिक और भावनात्मक रूप से विकास कर सकें।